Result Mitra Daily Magazine

मेजर बांब खथिंग की स्मृति में वीरता संग्रहालय

➢ चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में पिछले हफ्ते (31 अक्टूबर) को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अरुणाचल प्रदेश के तवांग में "मेजर रालेंगनाओ बांब खथिंग म्यूजियम ऑफ वेलोर" का उद्घाटन किया है।
- ज्ञातव्य है कि 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- मेजर "बांब खथिंग" ने "तवांग" को भारत में शांतिपूर्ण ढंग से एकीकृत करने के अभियान का सफल नेतृत्व किया था।
- गुमनाम नायक मेजर रालेंगनाओ बांब खथिंग की स्मृति में तवांग में वीरता संग्रहालय का उद्घाटन किया गया।
- मेजर खथिंग जिन्होंने तवांग को भारत में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, के सम्मान में संग्रहालय स्थापित करने का प्रस्ताव अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडु ने दिया था।
- मेजर खथिंग को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि वह एक साधारण व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अमूल्य योगदान दिया।

➢ बॉब खथिंग कौन थे ?

- रालेंगनाओ बॉब खथिंग जो "तांगखुल नागा" थे, का जन्म 28 फरवरी 1912 को मणिपुर के उखसल जिले में हुआ था।
- बॉब खथिंग ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई इम्फाल के सर जॉन स्टोन हाई स्कूल से की एवं गुवाहाटी के "कॉटन कॉलेज" से स्नातक किया।
- अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने उखसल उच्च विद्यालय में "प्रधानाचार्य" (Head Master) के रूप में काम किया।
- 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के बाद बॉब खथिंग भारतीय सेवा में शामिल हो गए एवं एक अधिकारी के रूप में आपातकालीन कमीशन प्राप्त किया।
- आगे चलकर भारतीय सेना में मेजर बॉब खथिंग ने एक "सिविल सेवक", एक विधायक मणिपुर में एक मंत्री और म्यांमार में भारत के राजदूत के रूप में अपनी सेवाएं दी।

➢ भारतीय सेना सेवा में बॉब खथिंग :

- द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के बाद बॉब खथिंग "विक्टर फोर्स" नामक गोरिल्ला संगठन में शामिल हुए।
- "विक्टर फोर्स" का गठन अंग्रेजों द्वारा वर्मा–भारत सड़क पर जापानियों से मुकाबला करने के लिए तैयार किया गया था।
- बाद में इस "विक्टर फोर्स" को SANCOL के नाम से जाना जाने लगा।
- इस SANCOL में 153 गोरखा पैराशूट बटालियन शामिल था, जिसका गठन जून 1944 में मेजर जॉन सॉन्डर्स की कमान के तहत किया गया था।
- बॉब खथिंग को 153 गोरखा पैराशूट बटालियन का सलाहकार नियुक्त किया गया था।
- ब्रिटिश राज्य के अंतर्गत भारतीय सेना में शामिल होने के कुछ ही समय के बाद बॉब खथिंग को बर्मा और भारत में जापानियों के खिलाफ नागा समर्थन जुटाने में उनकी भूमिका के लिए उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के सदस्य (MBE, Member of the orders of the British Empire) का प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनके बहादुर कृत्यों के लिए मिलिट्री क्रॉस (MC) भी प्रदान किया गया।
- बॉब खथिंग को 9/11 हैदराबाद रेजीमेंट जिससे अब कुमाऊं रेजीमेंट के नाम से जाना जाता है, में नियुक्त किया गया एवं तत्पश्चात 1942 में उन्हें शिलांग में असम रेजीमेंट में स्थानांतरित कर दिया गया।

Result Mitra TM

➢ बॉब खथिंग का "तवांग अभियान" :

- वर्ष 1951 में मेजर बॉब खथिंग जो उसे समय भारतीय सीमांत प्रशासनिक सेवा के सदस्य थे, को तत्कालीन असम के राज्यपाल जयरामदास दौलतराम ने अरुणाचल प्रदेश में "तवांग" पर कब्जा करने का काम सौंपा।
- दरअसल उस समय ऐसे संकेत थे कि चीनी तिब्बत में घुसने तथा भारत के साथ सीमा को फिर से संरक्षित करने की तैयारी कर रहे थे, ऐसे में भारतीय क्षेत्र "तवांग" को सुरक्षित करना आवश्यक था।
- जंगल युद्ध एवं गोरिल्ला युद्ध में पारंगत बॉब खथिंग ने 17 जनवरी 1951 को असम राइफल्स के 200 सैनिकों और 400 कुलियों के साथ असम के चारदुआर के पास लोखरा कैंप से तवांग के लिए ऑपरेशन शुरू किया।
- विभिन्न ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार जब बॉब खथिंग अपनी सेना के साथ लोखरा कैंप पहुंचे, तो उन्होंने वहां तवांग मठ के पास स्थानीय कर अधिकारियों, गांव के बुजुर्गों और तवांग के प्रमुख लोगों के साथ एक बैठक की।
- इन बैठकों में बॉब खथिंग ने अपनी कूटनीतिक कुशलता का प्रयोग करके स्थानीय "मोनपा समुदाय" पर तिब्बती प्रशासन द्वारा लगाए गए कठोर कर (Tax) के बारे में बताया तथा साथ ही तवांग के स्थानीय लोगों को भारतीय लोकतंत्र में बताकर उन्हें भरोसा दिलाया कि भारत उनके साथ प्रत्येक स्थिति में हमेशा खड़ा रहेगा।
- तवांग के स्थानीय लोगों से बातचीत करके उनका विश्वास जीतने के बाद 14 फरवरी 1951 को "तवांग" पर भारतीय ध्वज फहराकर उसे आधिकारिक तौर पर भारतीय प्रशासन के अधीन कर लिया गया।
- इसके बाद बॉब खथिंग ने तवांग के आसपास के क्षेत्र में प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की।
- बॉब खथिंग ने तवांग की पारंपरिक प्रथा का ध्यान रखते हुए तीन से दस गांवों का एक समूह बनाकर उसका नेतृत्व करने के लिए प्रत्येक समूह में गांव बुरास (गांव के बुजुर्ग) को नियुक्त किया।

➢ द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद बॉब खथिंग :

- द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद भारतीय सेना के तहत भर्ती होने वाले आपातकालीन कमीशन अधिकारियों को पदच्युत कर दिया गया, जिसमें बॉब खथिंग भी शामिल थे।

Result Mitra

- तत्पश्चात "बॉब खथिंग", जो मणिपुर के तत्कालीन महाराजा कुमार प्रियब्रत सिंह के बहुत गरीबी थे, की तत्कालीन अंतरिम सरकार में पहाड़ी क्षेत्रों के प्रभारी मंत्री के रूप में शामिल कर लिया गया।
- वर्ष 1949 में "मणिपुर" का भारत में विलय होने के बाद वहां के महाराजा प्रियब्रत सिंह के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार भंग हो गई।
- मणिपुर की अंतरिम सरकार भंग होने के बाद बॉब खथिंग "असम राइफल्स" में शामिल हो गए, जहां उन्होंने "दूसरी असम राइफल्स बटालियन" में 2 वर्ष तक सेवा की।
- वर्ष 1951 में बॉब खथिंग एक सहायक राजनीतिक अधिकारी के रूप में भारतीय सीमांत प्रशासनिक सेवा में शामिल हो गए।
- सहायक राजनीतिक अधिकारी के रूप में बॉब खथिंग ने मोकोकचुंग (नागालैंड) के उपायुक्त, सिक्किम में विकास आयुक्त एवं नागालैंड के मुख्य सचिव के रूप में कार्य किया।
- 1967 में नागालैंड के मुख्य सचिव के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने "नागालैंड सशस्त्र पुलिस" की स्थापना की एवं "नागा रेजीमेंट" की स्थापना में मदद की।
- बॉब खथिंग ने वर्ष 1963 में सशस्त्र सीमा बल (SSB)की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- "सशस्त्र सीमा बल" की स्थापना वर्ष 1962 में चीनी आक्रमण के बाद विशेष सेवा ब्यूरो के रूप में की गई थी, जिसे जनवरी 2001 में गृह मंत्रालय के अधीन कर दिया गया।
- वर्तमान में सशस्त्र सीमा बल (SSB) भारत–नेपाल सीमा की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रहा है।
- वर्ष 1972 में बर्मा के राजदूत के रूप में बॉब खथिंग ने कार्यभार संभाला एवं इस पद पर वर्ष 1975 तक बन रहे।
- बॉब खथिंग स्वतंत्र भारत के राजदूत नियुक्त होने वाले आदिवासी मूल के पहले व्यक्ति थे।
- बॉब खथिंग ने 1975 में नागालैंड राज्य के गठन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- वर्ष 1957 में भारत सरकार द्वारा बॉब खथिंग को चौथे सर्वोच्च भारतीय नागरिक पुरस्कार "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया।
- 12 जनवरी 1990 को बॉब खथिंग का निधन इंफाल में हो गया।

Result Mitra